Advanced International Journal of Multidisciplinary Research
E-ISSN: 2584-0487
editor@aijmr.com
Volume 4, Issue 4, July-August 2026
CrossRef DOI: 10.62127/aijmr.2026.v04i04.1460

लोककथाएँ और सामाजिक चेतना: परंपरा से आधुनिकता तक का विश्लेषण

Prof. Dr. Karishma M. Kambe

Associate Professor
Fine Arts
Govt. Art and Design College, Laxmi Nagar
Nagpur University

सारांश:
लोककथाएँ किसी भी समाज की सामूहिक स्मृति, सांस्कृतिक अनुभव, नैतिक मान्यताओं और जीवन-दृष्टि की जीवित अभिव्यक्ति होती हैं। वे केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि समाज की चेतना को निर्मित करने वाली महत्वपूर्ण सांस्कृतिक संरचनाएँ हैं। लोककथाओं में जनजीवन, संघर्ष, नैतिकता, आस्था, संबंध, श्रम, सत्ता, प्रतिरोध, न्याय और सामाजिक आदर्शों का ऐसा रूप मिलता है, जो लिखित इतिहास या औपचारिक साहित्य में प्रायः नहीं मिलता। प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य लोककथाओं की सामाजिक भूमिका का विश्लेषण करना है, विशेष रूप से इस दृष्टि से कि वे परंपरागत समाज में किस प्रकार सामाजिक चेतना का निर्माण करती थीं और आधुनिकता के दौर में उनकी भूमिका किस रूप में परिवर्तित हुई है। इस अध्ययन में लोककथाओं को केवल साहित्यिक पाठ न मानकर सामाजिक दस्तावेज के रूप में देखा गया है। शोध में यह प्रतिपादित किया गया है कि लोककथाएँ समाज को नैतिक दिशा देने, सामुदायिक पहचान स्थापित करने, पीढ़ियों के बीच सांस्कृतिक निरंतरता बनाए रखने और अन्याय के विरुद्ध प्रतिरोध की चेतना विकसित करने में महत्त्वपूर्ण रही हैं। आधुनिकता, शिक्षा, नगरीकरण, तकनीक, जनसंचार माध्यम और डिजिटल संस्कृति के प्रभाव से लोककथाओं का रूप बदला है, परंतु उनका महत्व समाप्त नहीं हुआ। आज भी वे नई व्याख्याओं, नए माध्यमों और नए सामाजिक संदर्भों में जीवित हैं। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि लोककथाएँ परंपरा और आधुनिकता के बीच एक सेतु का कार्य करती हैं तथा सामाजिक चेतना के विकास में उनका योगदान आज भी प्रासंगिक है।

मुख्य शब्द: लोककथा, सामाजिक चेतना, परंपरा, आधुनिकता, लोकसंस्कृति, नैतिकता, सामूहिक स्मृति

1. प्रस्तावना

मानव समाज के विकास में कथा की भूमिका अत्यंत प्राचीन और महत्त्वपूर्ण रही है। मनुष्य ने अपने अनुभव, भय, आशा, संघर्ष, नैतिक मूल्य और सामूहिक स्मृतियों को सबसे पहले कथा के माध्यम से ही अभिव्यक्त किया। यही कारण है कि लोककथाएँ किसी भी समाज की सांस्कृतिक आत्मा का महत्त्वपूर्ण भाग मानी जाती हैं। लोककथा वह कथा है जो किसी एक लेखक की रचना न होकर पूरे समुदाय की चेतना का परिणाम होती है। यह पीढ़ी-दर-पीढ़ी

Advanced International Journal of Multidisciplinary Research
E-ISSN: 2584-0487
editor@aijmr.com
Volume 4, Issue 4, July-August 2026
CrossRef DOI: 10.62127/aijmr.2026.v04i04.1460

मौखिक रूप से चलती हुई बदलती भी रहती है और जीवित भी रहती है। लोककथाओं का यह सामूहिक स्वरूप उन्हें सामाजिक अध्ययन के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण बनाता है।

लोककथाएँ केवल कल्पना या मनोरंजन का विषय नहीं हैं। उनमें समाज के नैतिक मापदंड, रिश्तों की समझ, श्रम की गरिमा, स्त्री-पुरुष संबंध, शक्ति-संरचना, न्याय-अन्याय की धारणाएँ, धर्म और लोकविश्वास, तथा सामुदायिक जीवन के मूल तत्व समाहित होते हैं। किसी भी लोककथा में नायक, खलनायक, संघर्ष, दंड, पुरस्कार, चमत्कार, देवत्व, प्रकृति और सामाजिक भूमिका का प्रस्तुतीकरण केवल कहानी की संरचना नहीं होता; वह समाज की मानसिकता का संकेतक भी होता है। इस दृष्टि से लोककथा सामाजिक चेतना का दर्पण भी है और निर्माता भी।

परंपरागत समाज में जहाँ शिक्षा का प्रसार सीमित था और लिखित साहित्य तक सबकी पहुँच नहीं थी, वहाँ लोककथाएँ सामूहिक शिक्षण का कार्य करती थीं। वे बच्चों को नैतिकता सिखाती थीं, युवाओं को जीवन का व्यावहारिक ज्ञान देती थीं और समुदाय को अपनी सांस्कृतिक पहचान का बोध कराती थीं। आधुनिकता के आगमन के बाद, जब समाज में शिक्षा, विज्ञान, तर्क, मुद्रण, नगरीकरण और तकनीक का विस्तार हुआ, तब लोककथाओं की भूमिका पर नए प्रश्न उठे। क्या वे केवल अतीत की वस्तु हैं? क्या आधुनिक समाज में उनका महत्व घट गया है? या वे नए रूप में सामाजिक चेतना को प्रभावित कर रही हैं? यही प्रश्न इस शोध-पत्र का आधार हैं।

2. विषय की पृष्ठभूमि

लोककथाएँ भारत सहित विश्व की लगभग सभी संस्कृतियों में पाई जाती हैं। भारतीय समाज में पंचतंत्र, जातक कथाएँ, राजा-रानी की कथाएँ, लोकदेवताओं की कथाएँ, पशु-कथाएँ, वीरगाथाएँ, दादी-नानी की कहानियाँ और क्षेत्रीय लोक आख्यानों की एक समृद्ध परंपरा रही है। इन कथाओं का स्वरूप क्षेत्र, भाषा और संस्कृति के अनुसार बदलता है, किंतु उनमें समाज की संरचना और लोकजीवन के मूल अनुभव साझा रहते हैं।

भारतीय परंपरा में लोककथाओं का महत्व इसलिए भी अधिक है क्योंकि यहाँ ज्ञान का संप्रेषण केवल ग्रंथों के माध्यम से नहीं, बल्कि श्रुति, स्मृति और लोकप्रसार के माध्यम से भी होता रहा है। गाँवों, मेलों, त्योहारों, चौपालों, परिवारों और स्त्री-समूहों में लोककथाएँ सुनाई और दुहराई जाती थीं। इनका एक महत्त्वपूर्ण पक्ष यह है कि वे किसी स्थिर रूप में नहीं रहतीं; समय, स्थान और श्रोताओं के अनुसार उनमें परिवर्तन होता रहता है। इसी परिवर्तनशीलता के कारण लोककथाएँ आधुनिक युग में भी नए अर्थ ग्रहण करती हैं।

सामाजिक चेतना से आशय उस सामूहिक बोध से है, जिसके माध्यम से समाज अपने मूल्यों, संबंधों, अधिकारों, दायित्वों और न्याय की अवधारणाओं को समझता है। यह चेतना अचानक उत्पन्न नहीं होती; इसे संस्कृति, शिक्षा, अनुभव, संघर्ष और संवाद मिलकर निर्मित करते हैं। लोककथाएँ इस प्रक्रिया का महत्वपूर्ण हिस्सा रही हैं। वे समाज को बताती हैं कि अच्छा क्या है, बुरा क्या है, शोषण क्या है, साहस क्या है, और सामूहिक जीवन में कौन-से व्यवहार स्वीकार्य या अस्वीकार्य हैं। इस प्रकार लोककथा सामाजिक चेतना के निर्माण की सांस्कृतिक पाठशाला है।

3. शोध के उद्देश्य

इस शोध-पत्र के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

1. लोककथाओं की संकल्पना और उनकी सामाजिक भूमिका को स्पष्ट करना।
2. परंपरागत समाज में लोककथाओं द्वारा निर्मित सामाजिक चेतना का विश्लेषण करना।

Advanced International Journal of Multidisciplinary Research
E-ISSN: 2584-0487
editor@aijmr.com
Volume 4, Issue 4, July-August 2026
CrossRef DOI: 10.62127/aijmr.2026.v04i04.1460

3. लोककथाओं में निहित नैतिक, सांस्कृतिक और सामाजिक मूल्यों की पहचान करना।
4. यह समझना कि आधुनिकता, शिक्षा, तकनीक और नगरीकरण के प्रभाव से लोककथाओं की भूमिका में क्या परिवर्तन आया है।
5. परंपरा से आधुनिकता तक लोककथाओं की प्रासंगिकता और उनके नए रूपों का अध्ययन करना।

4. परिकल्पना

इस शोध की मुख्य परिकल्पनाएँ निम्न प्रकार हैं—

1. लोककथाएँ समाज की सामूहिक चेतना को निर्मित और पोषित करने वाला महत्त्वपूर्ण सांस्कृतिक माध्यम हैं।
2. परंपरागत समाज में लोककथाएँ नैतिकता, सामुदायिकता और सामाजिक अनुशासन का महत्वपूर्ण साधन थीं।
3. आधुनिकता के प्रभाव से लोककथाओं का स्वरूप बदला है, किंतु उनका सामाजिक महत्व समाप्त नहीं हुआ।
4. लोककथाएँ आज भी नए माध्यमों और नई व्याख्याओं के माध्यम से सामाजिक चेतना को प्रभावित कर रही हैं।

5. शोध-पद्धति

यह शोध गुणात्मक और व्याख्यात्मक पद्धति पर आधारित है। इसमें लोककथाओं को सामाजिक-सांस्कृतिक पाठ के रूप में पढ़ा गया है। अध्ययन मुख्यतः द्वितीयक स्रोतों, लोकसाहित्य संबंधी विमर्श, सांस्कृतिक विश्लेषण, भारतीय सामाजिक संदर्भों और पारंपरिक कथा-संरचनाओं पर आधारित है। इस शोध में वर्णनात्मक, तुलनात्मक और विश्लेषणात्मक पद्धति का उपयोग किया गया है।

तुलनात्मक पद्धति के अंतर्गत परंपरागत और आधुनिक समाज में लोककथाओं की भूमिका की तुलना की गई है। व्याख्यात्मक पद्धति के माध्यम से यह समझने का प्रयास किया गया है कि लोककथाओं में उपस्थित चरित्र, घटनाएँ और प्रतीक किस प्रकार सामाजिक चेतना को प्रभावित करते हैं।

6. लोककथाओं की संकल्पना और स्वरूप

लोककथा वह कथा है जो लोकजीवन में जन्म लेती है, लोक द्वारा स्वीकार की जाती है और लोक के माध्यम से आगे बढ़ती है। इसका कोई निश्चित रचनाकार नहीं होता। इसका निर्माण सामूहिक अनुभवों से होता है। लोककथाओं में क्षेत्रीयता होती है, पर उनमें सार्वभौमिक मानवीय अनुभव भी होते हैं। यही कारण है कि एक ही कथा के अनेक रूप अलग-अलग क्षेत्रों में मिलते हैं।

लोककथाओं का स्वरूप बहुविध है। कुछ कथाएँ पशु-पक्षियों के माध्यम से नैतिक शिक्षा देती हैं; कुछ राजा-रानी और साधारण जन के माध्यम से सत्ता और न्याय का प्रश्न उठाती हैं; कुछ लोकदेवताओं, चमत्कारों और आस्था से जुड़ी होती हैं; कुछ हास्य और व्यंग्य के माध्यम से समाज की विसंगतियों पर चोट करती हैं। कई लोककथाएँ स्त्री की स्थिति, दहेज, लालच, वर्गभेद, श्रम, गरीबी, साहस और बुद्धिमत्ता जैसे विषयों को भी प्रकट करती हैं।

इस प्रकार लोककथा एक बहुस्तरीय संरचना है जिसमें मनोरंजन, शिक्षा, नैतिकता, प्रतीक और सामाजिक आलोचना सभी मौजूद रहते हैं।

Advanced International Journal of Multidisciplinary Research
E-ISSN: 2584-0487
editor@aijmr.com
Volume 4, Issue 4, July-August 2026
CrossRef DOI: 10.62127/aijmr.2026.v04i04.1460

7. परंपरागत समाज में लोककथाएँ और सामाजिक चेतना

परंपरागत समाज में लोककथाओं का महत्व अत्यंत व्यापक था। वे केवल बच्चों को सुलाने के लिए सुनाई जाने वाली कहानियाँ नहीं थीं, बल्कि सामूहिक जीवन के व्यवहारिक नियमों का अनौपचारिक पाठ भी थीं। परिवार और समाज में बुजुर्ग लोककथाओं के माध्यम से नई पीढ़ी को यह बताते थे कि सत्य का साथ देना चाहिए, लालच का अंत बुरा होता है, छल अंततः पराजित होता है, परिश्रम का फल मिलता है और अन्याय के विरुद्ध साहस आवश्यक है।

लोककथाओं में सामाजिक व्यवस्था का लोक-आधारित संस्करण मिलता है। उदाहरण के लिए अनेक कथाओं में गरीब किंतु बुद्धिमान व्यक्ति अंततः विजयी होता है, जबकि शक्तिशाली किंतु अन्यायी पात्र पराजित होता है। इससे समाज में न्याय की एक नैतिक कल्पना निर्मित होती है। इसी तरह स्त्री-केंद्रित लोककथाओं में धैर्य, बुद्धिमत्ता, त्याग, संघर्ष और लोकनिष्ठा जैसे गुणों को महत्व दिया जाता है। यह बताता है कि लोकसमाज स्त्री की भूमिका को समझता था, भले ही औपचारिक इतिहास उसे समान स्थान न देता हो।

लोककथाओं का एक अन्य महत्त्वपूर्ण कार्य सामुदायिक एकता का निर्माण था। जब एक ही कथा को पूरा समुदाय सुनता और साझा करता था, तब एक सामूहिक सांस्कृतिक पहचान निर्मित होती थी। यह पहचान केवल धार्मिक या भाषाई नहीं, बल्कि भावनात्मक और नैतिक भी होती थी। लोककथाएँ इस प्रकार समाज को एक नैतिक समुदाय में बदलने का कार्य करती थीं।

8. लोककथाओं में नैतिकता, न्याय और प्रतिरोध

लोककथाओं की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे साधारण भाषा और सरलीकृत कथानक के माध्यम से गहरी सामाजिक बात कह देती हैं। उनमें अच्छाई और बुराई का संघर्ष केवल नैतिक शिक्षा के लिए नहीं, बल्कि सामाजिक न्याय की चेतना के लिए भी महत्त्वपूर्ण होता है। एक अन्यायी राजा, लालची व्यापारी, अत्याचारी सास, चालाक जमींदार या धोखेबाज व्यक्ति लोककथाओं में बार-बार दिखाई देते हैं। इनके विरुद्ध साधारण, गरीब, बुद्धिमान या साहसी पात्र खड़े होते हैं। यह संरचना समाज को बताती है कि शक्ति हमेशा सत्य नहीं होती और न्याय के लिए संघर्ष करना आवश्यक है।

कई लोककथाओं में प्रतिरोध प्रत्यक्ष नहीं, प्रतीकात्मक रूप में व्यक्त होता है। उदाहरण के लिए किसी पशु-कथा में कमजोर प्राणी बुद्धि से शक्तिशाली को परास्त करता है। यह केवल मनोरंजक प्रसंग नहीं, बल्कि लोकमानस का यह विश्वास है कि अन्याय के विरुद्ध संघर्ष के लिए केवल शारीरिक शक्ति नहीं, बल्कि विवेक और साहस भी आवश्यक हैं।

लोककथाओं में स्त्रियाँ भी कई बार प्रतिरोध का रूप धारण करती हैं। वे कठिन परिस्थितियों में धैर्य और बुद्धि से संकट का समाधान करती हैं। इससे स्पष्ट होता है कि लोककथाएँ स्त्री को केवल दया या करुणा का पात्र नहीं बनातीं; वे उसे निर्णयकारी भूमिका भी देती हैं।

9. लोककथाएँ और सांस्कृतिक निरंतरता

लोककथाओं की एक बड़ी भूमिका सांस्कृतिक निरंतरता बनाए रखना है। वे पीढ़ियों को जोड़ती हैं। एक पीढ़ी अपने अनुभवों और मूल्यों को दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाती है। इस प्रक्रिया में केवल कथा नहीं, बल्कि भाषा, बोली, मुहावरे, प्रतीक, रीति-रिवाज, विश्वास और सामुदायिक स्मृतियाँ भी स्थानांतरित होती हैं।

Advanced International Journal of Multidisciplinary Research
E-ISSN: 2584-0487
editor@aijmr.com
Volume 4, Issue 4, July-August 2026
CrossRef DOI: 10.62127/aijmr.2026.v04i04.1460

यही कारण है कि लोककथाएँ किसी समाज की सांस्कृतिक विरासत का जीवित रूप हैं। वे संग्रहालय की वस्तु नहीं, बल्कि उपयोग में आने वाली सांस्कृतिक संपदा हैं। जब दादी-नानी बच्चों को कहानी सुनाती हैं, तब केवल समय नहीं कटता; एक संस्कृति अगली पीढ़ी में प्रवेश करती है। परंपरागत समाज में यह भूमिका अत्यंत गहरी थी। लोककथाएँ व्यक्ति को उसके समाज, पूर्वजों और सांस्कृतिक मूल से जोड़ती थीं।

10. आधुनिकता का प्रभाव: परिवर्तन और चुनौती

आधुनिकता के आगमन के साथ समाज की संरचना में गहरा परिवर्तन हुआ। शिक्षा का प्रसार, मुद्रण, औद्योगीकरण, नगरीकरण, विज्ञान, तर्कवाद, बाजार, रेडियो, टेलीविजन, सिनेमा और बाद में इंटरनेट तथा सोशल मीडिया ने सांस्कृतिक संप्रेषण के पुराने तरीकों को बदल दिया। इसके परिणामस्वरूप लोककथाओं की मौखिक परंपरा कमजोर पड़ती दिखाई दी। संयुक्त परिवारों के टूटने, गाँव से शहर की ओर पलायन, व्यस्त जीवनशैली और नई पीढ़ी की बदलती रुचियों ने लोककथा-परंपरा को प्रभावित किया।

फिर भी यह कहना सही नहीं होगा कि आधुनिकता ने लोककथाओं को समाप्त कर दिया। वास्तव में उसने उनके रूप को बदला है। लोककथाएँ अब पुस्तकों, पाठ्यक्रमों, रेडियो कार्यक्रमों, टेलीविजन धारावाहिकों, एनिमेशन, यूट्यूब, पॉडकास्ट और डिजिटल आर्काइव के माध्यम से नए रूप में सामने आ रही हैं। पहले जो कथा चौपाल या आँगन में सुनाई जाती थी, अब वही कथा नई व्याख्या के साथ मंच, फिल्म या डिजिटल माध्यम में प्रस्तुत होती है।

आधुनिकता ने लोककथाओं की आलोचनात्मक पुनर्पाठ की संभावना भी पैदा की है। अब लोग यह पूछते हैं कि लोककथाओं में स्त्री का चित्रण कैसा है, जाति और वर्ग का प्रश्न कैसे आता है, अंधविश्वास और तर्क के बीच क्या संबंध है, और किन कथाओं में शोषित समुदायों की आवाज़ दबा दी गई है। इस प्रकार आधुनिकता लोककथाओं को नष्ट नहीं करती; वह उन्हें नए विमर्शों के लिए खोलती है।

11. आधुनिक सामाजिक चेतना में लोककथाओं की प्रासंगिकता

आज के समय में जब समाज तेज़ी से बदल रहा है, लोककथाओं की प्रासंगिकता नए अर्थों में सामने आती है। पहला, वे सांस्कृतिक जड़ों से जुड़ाव बनाए रखती हैं। दूसरा, वे शिक्षा के क्षेत्र में मूल्य-आधारित शिक्षण का प्रभावी माध्यम बन सकती हैं। तीसरा, वे समाज को यह याद दिलाती हैं कि तकनीकी विकास के बावजूद मानवीय संबंध, नैतिकता और न्याय जैसे प्रश्न अभी भी महत्त्वपूर्ण हैं।

लोककथाएँ आज पहचान-राजनीति, सांस्कृतिक पुनर्स्मरण, भाषा-संरक्षण और वैकल्पिक इतिहास-लेखन के क्षेत्र में भी उपयोगी हैं। कई समुदाय अपनी लोककथाओं के माध्यम से अपनी उपस्थिति और विशिष्टता को पुनर्स्थापित कर रहे हैं। इसी प्रकार स्त्रीवादी और दलित अध्ययन भी लोककथाओं के पुनर्पाठ के माध्यम से उन आवाज़ों को सामने ला रहे हैं जिन्हें मुख्यधारा साहित्य ने कम महत्व दिया।

अतः आधुनिकता के युग में लोककथाएँ केवल अतीत की स्मृति नहीं, बल्कि वर्तमान की सांस्कृतिक और सामाजिक बहसों का सक्रिय हिस्सा हैं।

Advanced International Journal of Multidisciplinary Research
E-ISSN: 2584-0487
editor@aijmr.com
Volume 4, Issue 4, July-August 2026
CrossRef DOI: 10.62127/aijmr.2026.v04i04.1460

12. निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध-पत्र के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि लोककथाएँ सामाजिक चेतना के निर्माण में अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती रही हैं। परंपरागत समाज में वे नैतिक शिक्षा, सांस्कृतिक निरंतरता, सामुदायिक एकता, न्याय-बोध और सामाजिक अनुशासन का प्रभावी माध्यम थीं। उनमें निहित प्रतीक, संघर्ष और चरित्र समाज को सही-गलत, न्याय-अन्याय, श्रम-आलस्य, बुद्धिमत्ता-मूर्खता और साहस-भीरुता जैसे मूलभूत प्रश्नों पर विचार करने की दिशा देते थे।

आधुनिकता के प्रभाव से लोककथाओं का पारंपरिक मौखिक स्वरूप अवश्य प्रभावित हुआ है, परंतु उनका महत्व समाप्त नहीं हुआ। वे नए माध्यमों, नई व्याख्याओं और नए विमर्शों के साथ आज भी जीवित हैं। अब वे केवल सुनाई जाने वाली कथाएँ नहीं, बल्कि सांस्कृतिक पहचान, आलोचनात्मक चेतना और वैकल्पिक सामाजिक दृष्टि का स्रोत भी हैं।

इस प्रकार लोककथाएँ परंपरा से आधुनिकता तक सामाजिक चेतना की एक सतत धारा का निर्माण करती हैं। वे अतीत और वर्तमान के बीच संवाद स्थापित करती हैं और समाज को यह सिखाती हैं कि सांस्कृतिक विरासत का अर्थ जड़ता नहीं, बल्कि जीवंत पुनर्व्याख्या है। इसलिए लोककथाओं का अध्ययन आज भी उतना ही आवश्यक है जितना पहले था।

संदर्भ सूची

1. रस्तोगी, शिखा. (2024). *लोक साहित्य एवं लोक संस्कृति.* एस.बी.पी.डी. पब्लिशिंग हाउस.
2. उपाध्याय, कृष्णदेव. (1977). *लोक साहित्य की भूमिका.* साहित्य भवन.
3. सत्येन्द्र. (1971). *लोकसाहित्य विज्ञान.* शिवलाल अग्रवाल एंड कंपनी.
4. पाण्डेय, त्रिलोचन. (n.d.). *लोकसाहित्य का अध्ययन.* लोकभारती प्रकाशन.
5. परमार, श्याम. (1954). *भारतीय लोक-साहित्य.* राजकमल प्रकाशन.
6. भागवत, दुर्गा. (2020). *लोकसाहित्याची रूपरेखा* (4th ed.). वरदा प्रकाशन.
7. पाण्डेय, सत्यप्रिय. (n.d.). *लोक साहित्य का समाजशास्त्र.* सस्ता साहित्य मंडल.
8. प्रसाद, दिनेश्वर. (n.d.). *लोक साहित्य और संस्कृति.* लोकभारती प्रकाशन.
9. यादव, इन्दु. (n.d.). *लोक साहित्य.* साहित्य रत्नालय.
10. शर्मा, रामविलास. (n.d.). *लोक-जीवन और साहित्य.* विनोद पुस्तक मंदिर.
11. Beck, B. E. F., Claus, P. J., Goswami, P., & Handoo, J. (Eds.). (1987). *Folktales of India*. University of Chicago Press.
12. Ramanujan, A. K. (1994). *Folktales from India*. Knopf Doubleday Publishing Group.
13. Handoo, J. (1989). *Folklore: An introduction*. Central Institute of Indian Languages.
14. Handoo, J. (Ed.). (1998). *Folklore in modern India*. Central Institute of Indian Languages.
15. Bascom, W. R. (1953). Folklore and anthropology. *The Journal of American Folklore, 66*(262), 283–290.
16. Bascom, W. R. (1954). Four functions of folklore. *The Journal of American Folklore, 67*(266), 333–349.
17. Thompson, S. (1977). *The folktale*. University of California Press.

Advanced International Journal of Multidisciplinary Research
E-ISSN: 2584-0487
editor@aijmr.com
Volume 4, Issue 4, July-August 2026
CrossRef DOI: 10.62127/aijmr.2026.v04i04.1460

18. Propp, V. (1968). *Morphology of the folktale* (2nd ed., L. Wagner, Ed.; L. Scott, Trans.). University of Texas Press.
19. Dundes, A. (1980). *Interpreting folklore*. Indiana University Press.
20. Ghose, S. N. (1996). *Folk tales and fairy stories from India*. Courier Corporation.
21. Kumar, S., & Gajrani, S. (1999). *Traditions and customs in Indian society*. Om Publications.